रात्रि क्लास 12-3-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

बच्चों में दिमाग चाहिए। तुम यहां आये हो स्वर्ग के द्वार खोलने। बाबा ने सालोगन बताया था। शंकराचार्युवाचः भातारं नर्क का द्वार खोलती है, ज्ञान सागर शिव भगवानुवाचः भातारं स्वर्ग की द्वार खोलती हैं। तुम लिखते भी हो गेट वे टू हेविन। समझाने का दिमाग अच्छा चाहिए। कईयों का दिमाग नहीं। श्रीमत पर हम क्या कर रहे हैं। श्रीमत देने वाला भी कौन है। वह तो एकदम जैसे पोले है। तुम्हारा तो गायन है शिव शक्ति सेना। तो बच्चों में उछल चाहिए। बच्चा कहता है आगरा में अच्छा सेन्टर मिलता है। बोला अच्छा जाकर मकान लो। सेन्टर जाकर खोलो। बाप तो कहते हैं सभी को स्वर्ग का रास्ता बताओ। जालन्धर में बहुत अच्छा किया था। यह तो कहते हैं हम ओपनींग ही बहुत धमके से करेंगे। विश्व में शांति तो तुम ही स्थापन करते हो। बोलो हमको बाप द्वारा यह प्राईज़ मिलती है। इसको कहा जाता है बहुत नशा। बच्चों को बड़ा उमंग चाहिए। खाब चाहिए तो समझे इन शक्तियों को तो कमाल है। गायन भी है दिखाते हैं सुपनखा पुतना आद2 बरोबर हैं ना। भाईयो भी ऐसे हैं। तुम लिखते हो वह नर्क का द्वार खोलती हैं हम स्वर्ग का द्वार खोलती है। ल0ना0 के मंदिर, शिव के मंदिर में आजकल शादियां कराते रहते हैं। तुमको कहना चाहिए यह क्या जो पावन देवतायें उनके मंदिर में शादी। बड़ा नशा चाहिए। बाप कहते हैं यह मेरा पार्ट कल्प2 का है। तुम भी कहते हो बाबा हर कल्प2 आप से यह वर्सा लेते हैं। तो इतनी हिम्मत भी रखना चाहिए ना। तुम बच्चों में बड़ा नशा चाहिए। तुम शिव-शक्तियां हो ना। बाबा ने जालन्धर का प्रोग्राम अच्छा देखा। होना चाहिए पहले2 देहली में। देहली कैपीटल है ना। इसलिए बाबा कहते रहते हैं धैराव डालो। मेहनत करो। सर्विस एबुल बच्चा होगा तो बाबा इस सर्विस में लगा देंगे। बाप कहते हैं पुरानी दुनिया को भूल जाना है। बाप को ही याद न करेंगे तो नई दुनिया में कैसे जावेंगे। भभोचरा खाकर मानो कूकड़ पाना कोई अच्छी बात है क्या। पास विथ आनर होना चाहिए। बात-चीत करने की दिमाग बहुत अच्छा चाहिए। इस ज्ञान यज्ञ में विघ्न भी पड़ते हैं। सारी दुनिया ही इस यज्ञ में आहुति होती है। वह यज्ञ रचते हैं एक तरफ भक्ति दूसरे तरफ शास्त्र रचते हैं। तुम बच्चे जानते हो अभी सारी दुनिया ही स्वाहा होनी है। टाईम थोड़ा है। तुम सिध कर सकते हो। शंकराचार्यवाली चोपड़ियां बाबा ने कहा था हाथ करो। छपा भी सकते हो। तुम सच्च2 बतलाते हो। गीत भी है चलो वृंदावन ..... तुम तो जाते हो ल0ना0 के राजधानी में। हम अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हैं। ऐसे2 सालोगन का नारा लगाओ। बाबा तो ऐसे। सालोगन देखो तो बहुत खुश होते हैं। कोई कुछ कर न सकें। आपे ही थक जावेंगे। यह आर्य-समाजी आद तुम्हारे एडवरटाईज़ करते हैं। कल्प2 यह होता है। और तुम अपना राज्य-भाग्य लेते हो। माया तो नाक कान से पकड़ती रहेगी। माया है बाज़। एकदम हप कर देगी। दिमाग ही खड़ा करने न देती। मेहनत करो अच्छी तरह से। जाओ जगाते रहो। मुरलियां कितनी अच्छी2 चलाते रहते हैं। यह शंकराचार्य आद भी तुम्हारे चरणमें आवेंगे। राजा शरण आगया फिर प्रजा क्या करेंगे। डरने की बात ही नहीं। कोई2 समझते हैं ब्रह्मा का चित्र न डालें। अरे ब्रह्मा के बिगर ब्राह्मण कैसे बनेंगे। ब्रह्मा का चित्र ही न डाले तो डरपोक ठहरे ना। ड्रामा के प्लेन अनुसार करे2 अचानक मर जाते हैं। मिट्टी आद उठाते रहते हैं। तुम जानते हो यह मनुष्य सभी बन्दर मिशल हैं। वैश्यालय है ना। वह शिवालय था। यह तो वैश्यालय है ना। इसलिए बाबा ने लिखा था अपने से पूछो वैश्यालय के हो या शिवालय के हो। बैठे हो वैश्यालय में कहते हो शिवालय में। लज्जा नहीं आती है। तुम बच्चों की है अन्दर में गुप्त खुशी। हार्ट-फेल न होना चाहिए। हम इतनी मेहनत करते हैं। निकलती क्या है। यह सब ढेर प्रजा बन रहे हैं। अभी तो कितनी दुःखी प्रजा है। गन्दी नालियों पर झोपड़ियों में रहे पड़े हैं। नम्बरवार तो है ना। नम्बरवार तो होते ही हैं। तो नशा भर कर जाओ। तुमको ज्ञान अमृत की बोतल चढ़ाई जाती है। फिर बाहर निलने से नशा हीन न हो जाना चाहिए। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

:-: ओमशान्ति :-: